



329
Hindu
stotra

[illegible]

कृताक्षरं तदिदं निवर्तयन् विदुः सतानि रादविशुद्धं गच्छति साकृदि ॥ वक्ष्ये वि
 श्वं च नृप ॥ ॐ नमः ॥ सदा निवर्तयन् यत्तु महाशयाया दभूत्तयवस्तिता ॥ ॐ नमः
 कृत्तनीद विनमस्तु ॥ किन्तु यत्तु ॥ ॐ नमः ॥ सुमध्यस्तु मन्त्रस्तु नृपयिनि ॥ विदुः
 मध्यगतादधिकृतिं चार्द्धचदिक ॥ उद्यानकनिका रासदाय गन्तुं स्वतन्त्रिनि ॥
 उमाद्वद्वद्वत एवेति द्वादशमदियवर्द्धस ॥ ॐ नमः ॥ पूज्यं पूज्यं नरावर्द्धं साख्यं यावत्त
 निनि ॥ सम्राट् यत्तु मादविदक्षिणं गन्तुं मिनि ॥ नासा एव उतम् ॥ ॐ नमः ॥

गुरु यवाहिनी ॥ हस्त खं यनमानन्दतात्तुमूर्ध्वव्यवहितानादद्यष्टिकसंयुष्ट
 युष्मत्सकसमन्वित ॥ सुतं सुश्रुत्वासेदुद्वेधममधिममपूठदयाकार्यकाननक
 हृत्विनिर्गन्तादवियह ॥ यनायनयदुद्वेधेतांशुनाश्रुतध्रुवातध्रुवध
 नीदवियुद्धतत्वमिविभूत ॥ गक्तिमूनमहायूहविन्द्वीजसमन्वित ॥ अगनी
 नमहाकायसंसारार्धवतानिनि ॥ ऊखाचविऊयाचैवऊयनीचायनाजिता
 उर्वरूवीजमक्षसूतमसूपायमायनी ॥ वन्धमाक्षकनीदविषाज्जन्तयवलि

तां हि निनी ग कि मूल न महायूरु समन्विता ॥ गमणी गमणी लोनी माया मनुयवाहि
नी ॥ स्वच्छन्दते नवी दवी सकाक्षी मरुते नवी ॥ यश्च गद्वर्षयत्ता त्वया रजायका हि
ता ॥ अमृता रक्षा रूपा लुनम ॥ कायातिनी निव ॥ नृद किनी महामार्थ नमस्तु न
नते नवी ॥ ईश्वर कृतं विष्णु किं कृतं न काक्षि रयानना ॥ नमामि दवदधनि श्रद्धा न
धान रूयिणी ॥ काला मुखी वगवती उमा दवी नमा मुता ॥ यागिनी चणिया दवी लो
नी लक्ष्मी सनध्वती ॥ हंस स्वनाद गदवी लम्मुखी ग कि मातिनी ॥ कायूकी शुभ रगद

वीरज्जकार्यायनीनिवानिर्णयिनासमाख्यातानकावेकाकृतायना॥वाक्की
मारुध्वनीवेवकीमानीवेवकीतथा॥वाताहीवेवमाहदीचामुखीएयानना॥
याएतिसिद्धिदिवनि कृताकृकविरुविन॥नेदीवेवउशानपीयाम्यानेमयुर्व
रणी॥वायवावेवकीवनी॥श्रीमानमृदाकृताययागववृत्तकाताअहहासाज
यनिका॥अनिर्णयकवेवदवीकाकृनुवाकृमी॥अनिताली॥रुचउका॥अना
हरेनवकाकृतालीलीखनीवेवसंहान॥वेववाकृमी॥तथाकातीउमादवीदवद्व

तीनमायुत॥एडकातीउमंदवीचममृएययायहा॥महाकृमीमहागाननमस्तु
किन्नुविनी॥एडवेवविखाहानकदयात्वंउकृन्नुमाली॥दवीसनयत्वंकृन्नुक
नगमम॥दयाकृन्नुमममृकृमृकिस्ताननियाजयाइपानार्थितामहामायनतादि
कानिवदिउ॥यस्त्रिदयगतस्तानिर्णयवेवमानवक्षयाप्रातिथ्यचिनिताकामा
नमुनिर्णयवतिवस्तुएमी॥निर्णयवतिवस्तुमहामायाकृन्नुममृकृ॥०॥
नसेसादगतववेदममृएडवास्तवस्तुममृकृन्नुवस्तुस्त्रीनन्दनाजक॥०॥

ॐ नमस्तुते ॥ श्री हरे नमः ॥ वक्रा मि क व व दि बं पि
प्रा या ४ म दा रु मं । वि ज्ञा त मा ण रु ल दं शु किः
दं म् कि दं रु था ॥ ॐ ह्र वा क य व णा पि स व सः
म्य नि दा य कं । क ल्य का ठि व्र य ता धं न ता धं क

ॐ य य न तु ॥ अ न वी य स व न शु क्क य नु लि खा व य १
ॐ का न रु सि न या तु ल ता टं स य व रु था ॥ ग नु था
४ न कि वी ज्ञा र्थं ना सा यो क म ला स न ४ । न नु स न य
नि या तु क थं न रु तु पा व क ॥ क रु या जी व रु ना र्थाना

दोयं वग्गं नामम। विसृज्य लिङ्गं यातु लिङ्गद्वयं
तिथियः। सर्वं वखा क०४ यातु नाद० वा दादि कीर्त
नं। प्रमृत्तं हृदयं यातु तवर्गं चित्तं यत्तथा। नास्ति त
द्युगलं पृष्ठं वा दू वा ग्वादिना तिथि। किन्तु कलुषं

यातु कृदिनी तदवशात्। क०४ दं जीमद्वयं वा रू
त्रयातु वयातु यै। उ० थलं तदवशात्। ननु विद्विष
विर्तं। ग० क० स्वया विसृज्य लिङ्गं द० दं यातु मा। ना
०४ यातु नित्यं म० वा मायी उ० मू० द० यं। नमः श्रद्धा

दिनीयागु जंघयेजेक नी सदा। दीयनी स लव वागु
क्रदिनी नू धिन न क अ॥ ये न न विद्या विनिर्भ म दा स्याः
क्रादिनी ग अ। अस्ति नी स न न यागु म ह पि य नः
रु न वी। यं च विद्या चि ता यागु म ह सा न न रु न वी।

। क रु न या चि ता यागु म ह रु न रु न वी। द ह स
खी स दा यागु वा रु यं क उ म रु मी। न खा रु का म न
जा खी या भी र्व ग कि वा उ क। न रु की क व र्य य र्व स
व या य य ना स न। व न यू रु द द वि रु का ना वि उ

यं यदम। न स नाकु व ना द्वा विरे न वि। साध का वद
दहत्या भाद स अ सि सं गय ४॥ इति श्री आनि नी न
कु शी रे न वी क व र्यं स मा र्क ॥ इति न मा रे न वे ॥
॥ द य वा च ॥ नृ नृ य न ह स म स म या वा न ल द

नी। य न ह नान सि र्थ नि। उ न्म का ठि स ह स स ४॥
सि द्वा ४ स नी सि न द्वा वे य वा या न न त्य न ४ उ द
न वि र्क ४ स र्व ए स म या वा न या न क ४ य न नि द्वा स रि
यु स्या न उ य का व न न स द्वा शा म न सा यि न्म य द्वा वी स

दा त हा वा ना य ना ॥ अ क व ल्हां च क य द्यां वि ला क णि
यु ना मि कां ॥ य न म्य द्दु व रु ना वि मं म नु मू दी च य न
वि ष क य द्य सै का न रि य च रु य ना सि नी ॥ रा ष्वा द
य स मू ल्य न न म क व च व नि नी ॥ कृ षु य न्मुं त था य

स्यां वा जा नं वा ज य र्ज कं ॥ न हि सं क ल द व ३ द द्याः
म हि स म दि नी ॥ म थ रा नुं ल मा ला क म हू मां सं व
व स्ति यं ॥ द द्या च रं व यी द यी यु न म्य यु ज य न नू ॥ घा
व वि द्य वि ना सा य कृ वा वा च स मृ द्ध य ॥ न मा मि व च द

दवी मूलमा ला विरु विरु लं य ~~व्यं~~ तथा भायं य
स नारु वं गं तथा ॥ निर्वो द व्यु त्थ ना वे शु त्वा का कं तः
त्ये व य । क्मं क नि त्थ वि द् नि व द् ये न भा व य त्ता ता
मृ त् मृ त् कं र्च व च न न च क य व्य कं । अ दि य ध ने ल

क यं वि य ना वे क दा च न ॥ स र्हा स्मा य दि वा द व य (० वा
वा उ व स्म नि । त गु य दि यं रु त् म न सा क र्थ यि त्त्व वं ॥ प्र
न्मा लं वि नि था उ य त् य व र्त्त वि यि न न व । नि र्जु न स न्ध
म न्द य । य गु स्य (० उ त् म (० य दि द वा र्ग ति रु व त्ता द्वा

ॐ श्री लाम नृजान ता गङ्ग सुखा वरुं । गृह्णीतु मन्त्र
काली नमस्तु र्या दल दितं । कर्म कली तथा वोक्ता जम्बू
किं यमदु तिका ॥ कृष्णदवि मन्त्र मन्त्र सु उ क गिव
सि यिथ । नमस्तु वनदद वि काति कथा ननु यिनी ॥

स्मृता नृजान सर्वदृष्ट्या यद कि नम नृजान ॥ यल म्या
न नमस्तु न मन्त्री मन्त्र मन्त्र यातु । ध्यानेदं कृत्वा
नादी कि ति गन्धे युष्मदिनि ॥ द्युतं ध्यानेन वास्तु नम
स्तु सीरिया सिनी । इति न क थि रं यत्न समया वाचन

दनं ॥ (गमयं यनं नरुसंभक्त सो विनयकासिहं।
 नगसादुर्गनाकययौदनेवयकृद्वेग। गकिमः
 नं यूनसुखां तस्य सिद्धि नजायत। जयवैविनय
 लीवममरुकि यनायन॥ साधका रुकि यवनसुखा
 सादेकसुकिना॥ ॐ नित्यनमनरुस्यादिनरुसमयायनम

१ अथादि॥ सुखादि॥ तारुं यत्पुञ्जानधिय॥ ॐ नमस्तु वि कायनम
 जायवीमधुकेतरुस्यादि॥ सिद्धि नमु कियालीरु रुधिनमु धिनायुख
 पुष्टिनमु सति सुप्रसाति नमु रुतव सद्यवि नमु सुमर्ल सुद्वस
 न्ति कनो मयर्द आयप यवकामेय लक्ष्मी संपति वधर्ध जायवा
 नजाहारा नानी कवर्ध रुवनि दायक तरुदेव विद्या तानी साति
 रुव रु दायक॥ ॐ नमस्तु श्री मन्त्र श्री १३ यव दाय यव नि मिश्रथ
 कमलु न पय राऊनी नमस्तु लामि॥

॥ कनस ॥ ॥ माहासक्ति ॥



सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥
सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥
सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥
सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥ सुखं ॥

॥ आ ग मा ल ॥ ॥ ॥ मा हा का री न दि क ल व ल र ग न र
न नि र क व ज्ञा व ल ल ॥ ॥ आ गी नि ग न त र व न ह ल
यि त नि य सा र न ल ॥ ॥ सु दि तं कृ त वं ता न त न व
ल द व मा हा रं चित्तं अ मृ दं ग सा र न व ॥ ॥ स व हि
सं ग म अं ग अ नू व म लं ग सा र न वः त क व नी ॥
नि अ सु त मा हि नि व व म न सं ग त सु व ह न ॥ स क
लं व ल व क न ह क व सु क अ सु मा न ल ल ॥ त क



श्रीसिद्धि साता वि० ४ कं० राणी मिथ्या न्यायुवा । वाचिहृदा शिवा गीष्पनी । मा
रुकासिद्धि मि० कृ० मन्त्रा सिद्धि लक्ष्मी वि० हति सुहति नति ४५५ धति स्थानि
नाना यणी । न कृ० कला लखना ही मन्त्रा मन्त्रा कृ० आग यिया लं ययं न्या
किता नूड स मा रुनी । नै० कं० वं० कं० नो० लं० वं० नो० लो० मन्त्रा मं० कं० कृ० आ० यो० ग० यि० यो० लं० उ
यं० यो० किं० नो० नं० उ० स० मा० रुनी । लं० नवा ल्मा त न्य वक्ष्य आ लं० ग० याना रुता । मन्त्रा मन्त्रा नो० मो
निरिवा नयाना नू० न० कं० । मन्त्रा मन्त्रा स० य० स० । यवा य० मन्त्रा मन्त्रा दि० य० याना ल्मा वं० स० उ० क० रु

[illegible]

साद्वं मित्रा नृद॥ स्वतूपा च वित्रया च जून का काल लू यिनी वामस सा त्रित क
 या वामद व सुखा सह॥ यदरु नय त्रिउष्टं मा गा ही नं व ऊ दू व त्। क तु म द ति
 म द वि क स्य वे नि ४४ त्रं म म ४॥ मि शी मां ल नी द धु क क्का गं स मा य ४॥
 ए व गा वाम अ व लि य ऊ॥ न्या स॥ नें ऊ वां द द या दि व उ द्र न॥ आ स नं॥ नें ऊ आ
 धा दि ८॥ नें म दाय गा स ना र्ये या यू ज॥ आ न॥ नें ऊ धा त्र तू पा मि त्रौ डी व व लु
 तू पा मि त्र लु का ४४ डं सु क लाल व द ना य ग स्या य त्रि सं स्ति ता ४॥ निर्मा सा का ल ना
 गी त्र म धु मा ला वि रु मि ता॥ स्व द्म रु ग क ध त्री द वी उ म त्र स्व द्वां ग धा त्रि पी॥ क र्ति

कपालरुक्माचविन्द्याउधनातथा।वर्वलायिंगकम्भचयिंगगृथिंगलाच
नी॥सया रुत्रलरुखाङ्गीकाठारुत्रलरुषिता।उद्धकभीविनूपीचचासूअ
यत्रमश्वत्री॥आनपूर्ययायूऊ॥उग्रचन्द्रामृतविद्यानगरयाऊलि॥नेंऊकुमुंशी
सिद्धिवामूल्लयेवलिंगद्व२स्वाद॥नेंऊनडाडिडियातजालाधलयूछुंगिः
त्रिकामन्त्रीअयवलिंगद्व२स्वाद॥३३॥जञ्जानुदचन्द्रायवलिंगद्व२स्वाद
०००॥युचक्षुवादायवलिंगद्व२स्वाद॥उडुचन्द्रायवेवलिंगद्व२स्वाद॥मज्ज

रुनायिकायतासिष्टक २ स्वाहा ॥ ॐ चन्द्र येवसिष्टक २ स्वाहा ॥ ननेचधुव
 येवसिष्टक २ स्वाहा ॥ ॐ ओ चन्द्र नृपा येवसिष्टक २ स्वाहा ॥ अं अं अतिचलिका
 येवसिष्टक २ स्वाहा ॥ ॐ ती उग्र चन्द्राया ॥ ॥ हं ऊयाये ॥ हं विऊयाये ॥ मं अडि
 ताये ॥ हं अडिताये ॥ मं ऊंर न्ये ॥ नं रुंर न्ये ॥ वं मांर न्ये ॥ यं आक र्व न्ये ॥ ॐ तिका
 यायनि ॥ ॥ अं वद्वायनी ॥ कं मांर न्ये ॥ चं कोमासि ॥ टं वेकुवि ॥ नं वानादि ॥ यं
 ॐ लायनि ॥ यं वामूडा ॥ नं मांर न्ये ॥ ॐ तिष्ठन्मन्त्रि ॥ ॥ गताचतुर्वि

आगिष्ठावलि॥ नैऋतं ऊरुयात्र विजयात्रैव ऊरुयात्राय नाडिता॥ नन्दारुडात
 धारोमाकलात्रैवात्र काकुथा॥ १ ॥ दिव्यशार्ङ्गिमहाशानी सिद्धिशानी न
 ष्यन्ती॥ साकिनाकात्रलाणी च उर्ध्वकजिनिष्पकनी॥ २ ॥ गंगानीवणी क्
 लायवनाद्गीउलामिका॥ शीवणी च महानन्दाद्यालामुखी तथैव च॥ ३ ॥
 यिष्ठात्री रुक्मिणी चैव यक्ष्णी धूर्जती तथा॥ विषरक्तसर्वसिद्धिरुद्विष्टा तथा
 वच॥ ४ ॥ दूकानीयैति तैंगत्रैका॥ मन्त्रयस्त्रयं उङ्कानां मन्दहास्यं द्युयं रुद्र

२ सर्वजानिं करु २ मम सिद्धिं करु २ दुःखं २ सुखं २ साह ॥ २२ ॥ निवृत्त ४ यही सा
गिला बलि ॥ २३ ॥ २४ ॥ मनी ४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ पार्वत्यै नमः ॥ त ग व न म
व व लालै दे वा नां प्री ति का न क ॥ ॐ न वं क व रं
कृ हि य दि तं स्मि कृ या म यि ॥ वा न त्या गं कृ नि ष्या मि
य दि ना क थ यि ष्या सि ॥ स त्वं स त्वं पू न स त्वं स त्वं भ क न सं भ
य ॥ ॐ त्वं दे वा व र ॥ ॐ त्वो सा त्व न शि व स र्व ॥ व कु
श व क र्म यं कृ या व र्ता प्री ति सा द र्ता ॥ ॥ ॐ न ड वा य ॥
क व रं व रं कृ दि यं ग न म त्प्रा न व रं ॥ व रं कृ का त नु स र्व र्म व
द क र्मा वि षा य त ॥ त त्म न्ना शी त रं उ वा स द डी ग व र
य क ॥ तं क र्म न न द्वि ती या व द क र्म नु न य न ॥ र ॥
व र्ग स र्म सि त्वे ज्ञा य द क र्मा न ना य या क र्म य म

[illegible]

सदा ॥ ॐ क्रील लिता ह न व ४ वा ३ ज ४ लि ४४। कि सु ६ ४ ॐ क्री
वि ४ व नाथ सदा या ३ स वी गं म म स र्द वा ॥ ॐ क्री ज न ४ स
दा या ३ ज स न ४ व लु का ॥ ज सि ता ग ३ मि न वा ३ ल ल
र ३ र ह न व ॥ व र ल वा ३ व कू म कं ल म कू व र ल वी
उ म ल ह न व ४ वा ३ क द य म म स र्द वा ॥ ना लि ६ ८ ४ क
क वा ली य लि ४ स ह त ह न व ४ ॥ मु ला ४ ४ न ४ ली ४
म वा ह य म नु ह न व ४ ॥ ह स वी रं वा ३ क दि ॥ सा ह न ४ ३
प्रा ४ ४ ॥ वा ल म घा नो स मा नी ४ ३ द नं ४ न म व व र ॥ न ४
न ४ न म ल व द ग दि कू स म त ४ ॥ व न क वा ३ स र्द गं ल
वी रं म हा र य ॥ ॐ लि ४ ४ कू क व रं ल व स व क
मि ता ॥ य ३ व गृ व द नी ल म ह ६ व व की कि ती य
य ६ ४ ४ ४ या द वि ४ य न व यो ल म त द न द म य
उ लो ल ह न व म व द ॥ य ३ न यि क य द वि क व य
म म र्वा दि ता ॥ क ४ ४ न्मा ४ ४ त पा वं वि न ४ ४ र्थ व
न ४ न ॥ ४ ल म ४ ४ मि स ४ ४ वा ह ग ह ४ ४ ल ४ ४ क

[illegible]

वस ८८५ त्रिंशत् कल वागी रवे कू ७४ दयं पूत्राय मिश्राय
 ४५ नायप्रियवादिन ॥ कार्यन्धनहिताया ४३ रुद्राय वद कस्य
 शिवायानी कुव पवता र्वतस्य न स्यनी त्वे न ॥ आयु विद्या य
 ८८५ ५ भो वनं र्वे वनसं गायध स्यात्स र्वत्रुल्लेन ८८५ वये भो र्वजान
 ४॥ ३२॥ ॥ ॐ लिङ्गा कालिका तं ॐ रुद्र लङ्गेनी सं वा दं वद करे
 न वक्व वयं समाक ४॥ ४३ रुद्रा सं वत २२२ कालिक कृष्ण १३
 ५॥ ५॥ सामवातध कृष्ण सिद्ध शत ४३ रुद्र ॥ लीखीतं विष्णुना नायन
 ३५



दि गो म ना क र्मः ५॥३॥

यानन कू कू श थ थ या य मालः यानन वैला नि दान सा द धा त
 साः सु ना यः यू ज्ञा या य ॥ व ता इ डा वेल सुः द धा थि र्मा न या व
 थ ग्ग दि गि ला क य द या र्वा यान न या यः ॥ त्वं दे वी सर्व दाना नी
 लं ग ति र्त्वं य ना य ॥ त्वं द र्शा य न म म्म निः त्वं द नि ग न न म्म
 ॥ ॥ ह न म्म या स या त ति ला क थ ॥ ग म न र्वा थ श ला यः ॥ म्म य वि र्
 या य र ॥ श क्त्वा क वि / ना सा यः यू न ना बि ज या य वः ॥



अ य ॥ त व ना ह क ल्यः ॥ व स त म न र्वा यः क
 नि श ग व थ म व ल नाः जी म्मी य ॥ त न त र्वा क्क ज्ञा
 यी व र्त्वं यू म्म म्म नः हि म व न वा यः व ॥ य ति स नि
 म्म न्यः वा ॥ कि ऊ ऊः वा म्म त्या द जि न क ल न वा
 ल द म्म न ल ग न ल लि न लो ॥ ह व वृ न्दा र्वा म्म



दि द र्शो न या य क म न ॥ ५॥३॥

